ये बैरी रात

केशव पांडेय
छात्र – अलायंस विश्वविद्यालय

मेरी आँखों के सामने आ मेरी सारी ज़िंदगी आज खड़ी है
उस बीते हर अफ़साने को देख आज ये सूनी रात भी रो पड़ी है
जो मैंने पाया और जो मैंने पाकर खोया
उन्हीं को याद कर इस बैरी रात के साथ मैं रोया।

लेकिन, ये बैरी रात आज बैरी ना रही
चुपके से आकर उसने मेरे कानों में कही - -
"मुझे अपना ले, मेरे साथ ही रह जा
अपने अंधियारे को मेरे अंधियारे से मिला
और सदा रहना वाला एक उजाला कर जा
क्यूँकि दिन के उजाले ने सिर्फ़ तुझे अंधेरा दिया है
सुबह का इंतेज़ार कर, उसे जी कर, तूने याद सिर्फ़ मुझे किया है
तुझे तरपाया , पर तुझे सुकून भी तो मैंने हीं दिया है
वादा है तुझसे, छुपा लूँगी तुझे संसार के उजले अंधकार से
मोहब्बत हो जाएगी तुझे मेरे रूप साकार से
तेरा हर अफ़साना पूरा होगा तेरे हीं ढंग से
सुकून आएगी तुझे मेरे संग से"

तो मैंने पूछा रात से,
"की अगर तू भी चली गयी"
रात ने मुझे रोक कहा,
"मैं जाती हूँ दिन के उजियारे की
तेरी उम्मीद से
क्यूँकि मैं चलती हूँ तेरी हीं चाहत
और उम्मीद से
तू चाहे तो मैं सुकून दूँ, तू चाहे
तो मैं तुझे तड़प दूँ
तू मेरी आग़ोश में सोना चाहे
तो मैं तुझे सुला दूँ
तू अगर मेरी ओर यूँही देखता
रहना चाहे तो मैं तेरी नींद ले लूँ
तू जो कहे, जैसे कहे, मैं वो करूँ
क्यूँकि मैं तुम ही तो हूँ
तेरी शून्यता में भी मैं
तेरी मशगूल दुनिया में भी मैं
तेरे सुख में भी तेरे दुख में भी मैं
तेरे लिए मैं ही तो हूँ
भले तूने सैकरों खोया

पर तेरे पास अभी भी हूँ मैं
मेरे अंधेरे से ही तेरा अंधेरा उजागर होगा
मेरे साथ से ही तू, तू होगा
मुझे बैरी मत समझ
मैं तेरी हूँ, तुम ही हूँ
बैरे उज़ियारे की उम्मीद में,
अपने इस अंधकार को मत भूल
क्यूँकि अंधकार ही सही
मैं तेरी हूँ, तुम ही हूँ"